टिप्पणी

9

अख़बार की दुनिया

अख़बार, समाचार-पत्र या न्यूज़ पेपर पढ़ना हमारी आदत में शामिल हो गया है। रोज़ सुबह उठते ही अख़बार वाला अख़बार दे जाता है और हमारी पैनी निगाहें उस पर दौड़ने लगती हैं। शहर में, राज्य में, देश में, दुनिया में कौन-कौन सी घटनाएँ घटीं, उन्हें विस्तार से जानने के लिए हम अख़बार पढ़ते हैं। अख़बार के अलावा रेडियो, टेलीविज़न और अब इन्टरनेट के द्वारा भी समाचार हम तक पहुँचते हैं, परंतु अख़बार पढ़कर हमें विभिन्न समाचारों की विस्तार से जानकारी प्राप्त होती है।

अख़बार पढ़ते समय आप देखते होंगे कि इसमें समाचारों के अलावा और भी सामग्री होती है, जैसे—संपादकीय, कार्टून, फ़ीचर, विज्ञापन आदि। इस प्रकार, अख़बार हमें तमाम महत्त्वपूर्ण घटनाओं की सूचना कई प्रकार से देता है।

इस पाठ में अख़बार की दुनिया की जानकारी दी जा रही है। आइए, देखें कि अख़बार में क्या-क्या सामग्री शामिल होती है और उसे किस प्रकार तैयार किया जाता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप—

- अख़बार के विभिन्न अंगों — समाचार, संपादकीय, फ़ीचर, फ़ोटो, कार्टून, ग्राफ़िक्स, विज्ञापन आदि के महत्त्व से परिचित हो सकेंगे,
- एक ही विषय पर छपे अलग-अलग अख़बारों के समाचारों की तुलना कर सकेंगे;
- समाचारों के आधार पर किसी घटना के बारे में अपना निष्पक्ष और तार्किक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे;
- किसी घटना के बारे में प्रकाशित समाचारों पर लिखकर अथवा बोलकर अपने विचार व्यक्त कर सकेंगे;

- समाचारों का विश्लेषण कर सकेंगे;
- समाचारों की भाषा से परिचित होकर उनका लेखन कर सकेंगे;
- समाचारों की उपयोगिता का उल्लेख कर सकेंगे।

क्रियाकलाप-9.1

आप अख़बार पढ़ते हैं। कई अख़बारों से परिचित भी हैं। तो फिर—

1. किन्हीं चार हिंदी अख़बारों के नाम लिखिए।

   1...................................2...................................3...............................4..................................

2. अख़बार में मुख्य रूप से किस-किस तरह के समाचार छपते हैं?

   जैसे—खेल-समाचार, इसी प्रकार के अन्य उदाहरण दें—

   ....

   ....

9.1 अख़बार का स्वरूप

बहुत से लोगों की धारणा है कि अख़बारों में सिर्फ़ समाचार छपते हैं। लेकिन, अख़बारों में सिर्फ़ समाचार ही नहीं छपते, बल्कि समाचारों पर आधारित और समाचारों से अलग हटकर भी बहुत सारी चीज़ें छपती हैं, जिन्हें हम अलग-अलग नामों से जानते हैं। इन्हें हम अख़बार के अंग भी कह सकते हैं। इन्हीं सारी चीज़ों से मिलकर अख़बार का स्वरूप बनता है। हर अख़बार इन अलग-अलग चीज़ों के लिए अपने ढंग से अलग-अलग स्थान निर्धारित करता है। इससे अख़बार पढ़ने में सुविधा होती है। आइए, अख़बार के स्वरूप या उसके अंगों के बारे में जान लें।

9.2 अख़बार के अंग

आपने देखा होगा कि हर अख़बार में कुछ चीज़ें अनिवार्य रूप से छपती हैं, जैसे—

समाचार, संपादकीय, फ़ोटो, फ़ीचर, लेख, कार्टून, ग्राफ़िक्स और विज्ञापन आदि। इन्हें ही अख़बार के अंग कहा जाता है। अख़बार के मुख्य अंगों को नीचे दिए गए रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है—

यह आवश्यक नहीं कि हर अख़बार में ये चीज़ें एक ही तरह से छपती हों। हर अख़बार इन्हें अपने-अपने ढंग से प्रकाशित करता है। इन्हें प्रकाशित करने की हर अख़बार की अपनी शैली होती है जो उस अख़बार को विशिष्ट स्वरूप और पहचान देती है। आइए, अब अख़बार के विभिन्न अंगों के बारे में विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

समाचार-पत्र अथवा अख़बार के अंग

- समाचार
- संपादकीय
- फ़ोटो
- फ़ीचर
- लेख
- साक्षात्कार
- कार्टून
- ग्राफ़िक्स
- विज्ञापन
- पत्र
- मौसम बाजार भाव आदि

चित्र 9.1

9.2.1 समाचार

समाचार अख़बारों का प्रमुख अंग होता है। लेकिन, अब सवाल यह उठता है कि क्या सिर्फ़ अख़बारों में छपने वाले समाचारों को ही समाचार कहा जा सकता है या उन दूसरी घटनाओं को भी, जो अख़बारों में नहीं छप पातीं? क्या हर घटना अख़बारों के समाचारों में छप जाती है? ये सवाल स्वाभाविक हैं और आपके मन में भी उठते होंगे। कई बार ऐसा भी होता है कि कोई घटना घटती है, उसे आप देखते हैं या उसके बारे में सुनते हैं और सोचते हैं कि इसका समाचार अख़बार में ज़रूर छपेगा, लेकिन जब दूसरे दिन सुबह आप अख़बार देखते हैं, तो वह समाचार नहीं छपा होता। तब आप सोचते होंगे कि ऐसा क्या कारण था, जिसकी वजह से वह समाचार अख़बारों में नहीं छपा। फिर तरह-तरह के सवाल आपके मन में उठते होंगे। आप यह भी सोचते होंगे कि अख़बार का संवाददाता या अख़बार के संपादकीय विभाग के लोग सिर्फ़ अपनी पसंद के समाचार ही अख़बारों में छापते हैं, लेकिन ऐसा नहीं है। वस्तुतः वही घटना समाचार बनती है जिसका स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय दृष्टि से महत्त्व होता है।

उसके बाद हर अख़बार अपनी प्राथमिकता के आधार पर समाचारों के पृष्ठों का बँटवारा करता है। पहले पृष्ठ पर राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्त्व के समाचार छपते हैं। दूसरे और तीसरे पृष्ठों पर स्थानीय समाचारों को स्थान दिया जाता है। इसी प्रकार, अंतिम पृष्ठों पर क्रमशः अंतरराष्ट्रीय समाचारों, अर्थ अथवा व्यापार-जगत् के समाचारों और खेल-संबंधी समाचारों को स्थान दिया जाता है। बीच का एक पृष्ठ संपादकीय और पाठकों के पत्रों के लिए होता है। फिर इन्हीं पृष्ठों पर बीच-बीच में विज्ञापनों को भी स्थान दिया जाता है। इस प्रकार, हर अख़बार में उसके आकार और पृष्ठों की संख्या के

टिप्पणी

अनुसार ही अलग-अलग क्षेत्रों के समाचारों को प्रकाशित करने के लिए स्थान निर्धारित होता है। ऐसे में किसी भी अख़बार के लिए हर घटना को स्थान दे पाना संभव नहीं होता। इसलिए, हर क्षेत्र की प्रमुख और महत्त्वपूर्ण घटनाओं के समाचार ही अख़बारों में प्रकाशित हो पाते हैं। हम आगे **समाचारों की चयन-प्रक्रिया** पर बात करते हुए इस पर और विस्तार से चर्चा करेंगे।

समाचारों की चयन-प्रक्रिया

अख़बारों के लिए समाचारों का चयन करना एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और ज़िम्मेदारी का काम होता है, क्योंकि अख़बारों की साख और लोकप्रियता उनके समाचारों के चयन के आधार पर ही टिकी होती है।

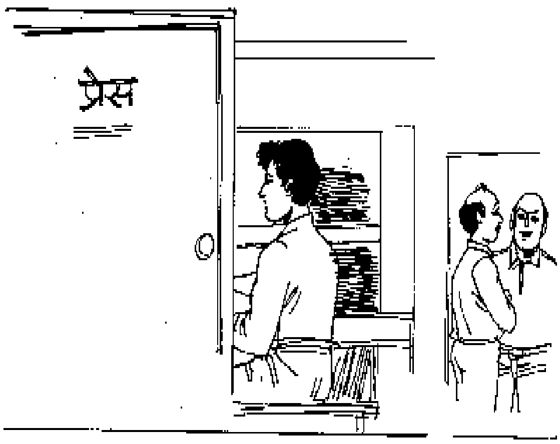

चित्र 9.2

अख़बारों में समाचारों का चयन सामूहिक निर्णय के आधार पर किया जाता है। हर अख़बार में अलग-अलग क्षेत्रों के अनुसार संवाददाताओं का वर्गीकरण किया जाता है। ये सभी संवाददाता अपने-अपने क्षेत्रों की ख़बरें रोज़ शाम तक अख़बार के संपादकीय कार्यालय में पहुँचाते हैं। इसके अलावा पी. टी.आई., यू.एन.आई., ए.पी., ए.एफ़.पी., रायटर आदि कई सरकारी तथा गैर-सरकारी, देशी-विदेशी समाचार एसेंजियाँ भी हैं, जो अपने सदस्य अख़बारों को प्रतिदिन समाचार भेजती रहती हैं। ये समाचार इन्टरनेट के माध्यम से आते हैं। इसके अलावा शहर की विभिन्न संस्थाएँ और विभाग प्रेस-विज्ञप्ति के माध्यम से भी अपनी गतिविधियों के समाचार डाक, फ़ैक्स या ई-मेल के द्वारा अख़बारों के दफ़्तरों में भेजते हैं। इस तरह

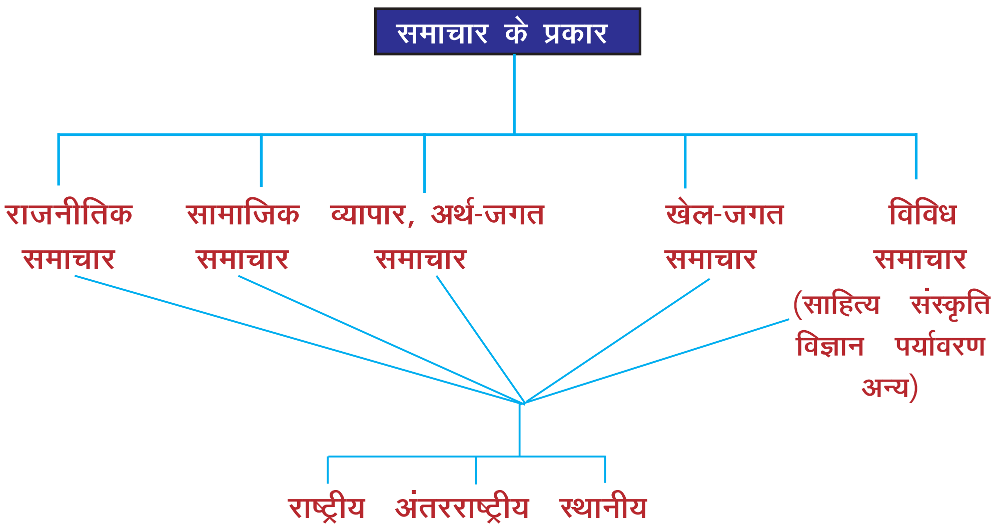

टिप्पणी

अख़बारों के कार्यालयों में प्रतिदिन शाम तक हज़ारों समाचार एकत्र हो जाते हैं। लेकिन, अख़बारों में स्थान सीमित होता है, ऐसे में हर समाचार को स्थान दे पाना संभव नहीं हो पाता। ऐसी स्थिति में उनके महत्त्व के आधार पर समाचारों का चयन करना पड़ता है।

समाचारों का चयन पहले तो संवाददाता अपने विवेक के आधार पर स्वयं ही कर लेते हैं। उसके बाद प्रमुख संवाददाता उनमें से समाचारों की छँटनी करते हैं। उसके बाद पृष्ठ की क्षमता को ध्यान में रखते हुए समाचार-संपादक और प्रमुख संपादक आपसी परामर्श के आधार पर समाचारों का चयन करते हैं।

समाचार के अंग

जब कोई संवाददाता किसी घटना की सूचना देता है, तो उसके लिए कुछ बातों का ब्यौरा देना आवश्यक होता है। यह सभी अख़बारों में आपको देखने को मिल जाएगा। इसके बाद समाचारों के महत्त्व के अनुसार उनकी प्रस्तुति में पाठकों की सुविधा और रुचि को ध्यान में रखते हुए कुछ चीज़ें जोड़ दी जाती हैं। ये चीज़ें समाचार के अंग कहलाती हैं। समाचार के प्रमुख अंगों को निम्नांकित रेखांकन के माध्यम से आसानी से समझा जा सकता है :

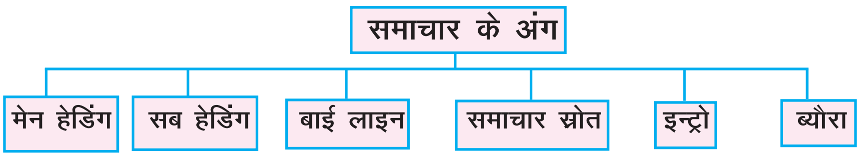

आवश्यक नहीं कि सभी समाचारों में इन अंगों का प्रयोग जरूर हो। जैसे सब हेडिंग और बॉक्स-मैटर को सभी समाचारों में प्रयुक्त नहीं किया जाता। इनके अलावा बाकी अंगों को सभी समाचारों में अनिवार्य रूप से देखा जा सकता है। आइए, इन अंगों के बारे में थोड़ी अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं। लेकिन, उससे पहले हम समाचार की प्रकृति के बारे में भी थोड़ा जान लें, तो इन अंगों के बारे में जानने में सुविधा होगी।

वास्तव में, समाचार एक तरह से किसी भी घटना के बारे में उठने वाली आम आदमी के मन की सभी जिज्ञासाओं का निदान होता है। दूसरे रूप में समाचार किसी भी घटना का संपूर्ण ब्यौरा होता है। मान लीजिए, आप कहीं जा रहे हैं। रास्ते में एक जगह आपको भीड़ जमा हुई दिखाई देती है। आपके मन में जिज्ञासा उठती है। आप रुकते हैं और पूछते हैं क्या हुआ? जवाब मिलता है – दुर्घटना हो गई। एक आदमी मर गया। आपकी जिज्ञासा बढ़ती है। आप फिर पूछते हैं – कैसे हुआ? जवाब आता है – बस से। आप फिर पूछते हैं – कब हुआ? फिर जवाब में पूरी घटना का ब्यौरा आपको मिल जाता है। एक संवाददाता भी इसी तरह समाचारों का संकलन करता है और उन्हें प्रस्तुत करता है। दरअसल, समाचार क्या, कैसे, कब, कहाँ, क्यों, कौन, किस आदि सवालों (ककारों) के जबावों का संपूर्ण विवरण होता है।

मेन हेडिंग (मुख्य शीर्षक)

जैसा कि हमने अभी पढ़ा, किसी भी घटना के बारे में हमारे मन में पहली जिज्ञासा उठती है कि क्या हुआ? यही समाचार का मेन हेडिंग होता है। जैसे दुर्घटना का समाचार देना हो तो मेन हेडिंग हो सकता है – 'बस दुर्घटना में एक की मौत।' इस हेडिंग या शीर्षक को पढ़कर ही पूरे समाचार के बारे में एक मोटी जानकारी मिल जाती है। आपने अक्सर लोगों को इस तरह की बातें करते सुना होगा कि आज 'क्या' नया समाचार है? आज संसद में 'क्या' हुआ? बाज़ार में सोने का भाव 'क्या' है या क्रिकेट मैच में 'क्या' हुआ आदि। मेन हेडिंग इसी 'क्या' का उत्तर होता है। मेन हेडिंग से घटना के बारे में एक मोटी सूचना तुरंत मिल जाती है। फिर उसके बाद की जिज्ञासाएँ उठती हैं। एक ही समाचार के लिए विभिन्न अख़बारों का मेन हेडिंग सभी अख़बारों में भिन्न हो सकता है।

किसी भी समाचार (के मुख्य शीर्षक) को पढ़ने के बाद पाठक के मन में लगातार कई जिज्ञासाएँ उठती हैं और वह एक झटके में उनके बारे में जान लेना चाहता है। उन्हीं जिज्ञासाओं को शांत करने के लिए छोटे-छोटे वाक्यों में सब हेडिंग (उपशीर्षक) दिए जाते हैं। प्रायः सब-हेडिंग बड़े समाचारों के साथ ही दिए जाते हैं, क्योंकि बड़े समाचारों को पढ़ने में पाठक को समय लगता है। इसलिए, जो लोग जल्दी से समाचारों पर एक नज़र डालकर अपने काम पर भागने की जल्दी में होते हैं, उन्हें सब-हेडिंग्स पढ़कर समाचार की मुख्य-मुख्य बातों का पता चल जाता है।

बाइ लाइन

समाचार लिखने वाले अथवा प्रस्तुत करने वाले संवाददाता के नाम को बाइ लाइन कहते हैं। आपने देखा होगा कि समाचारों के साथ संवाददाता का नाम भी लिखा होता है। उसे ही बाइ लाइन कहते हैं।

समाचार-स्रोत

यह समाचार का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है। इससे समाचार की प्रामाणिकता का पता चलता है। इसमें समाचार का ब्यौरा देने से पहले यह बताया जाता है कि समाचार कहाँ से प्राप्त हुआ और किस माध्यम से प्राप्त हुआ।

अख़बार पढ़ते समय आपने ध्यान दिया होगा कि एजेंसियों के बाद शहर का नाम लिखा होता है। यदि 'नई दिल्ली' लिखा है, तो इसका अर्थ यह है कि यह समाचार नई दिल्ली से लिया गया है या यह घटना नई दिल्ली में घटी है। उसके बाद घटना की तिथि दी जाती है। आपने ध्यान दिया होगा कि प्रायः अख़बारों में समाचारों की तिथि उस समाचारपत्र की प्रकाशन-तिथि से एक दिन पूर्व की दी गई होती है। ऐसा इसलिए होता है कि अख़बार रात को छपते हैं और सुबह-सुबह आपके पास पहुँच जाते हैं। यानी ये समाचार एक दिन पूर्व की रात तक के होते हैं।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि समाचार **किसने** प्राप्त किया, **कहाँ से** प्राप्त किया और **कब** प्राप्त किया, इनकी जानकारी को समाचार-स्रोत कहा जाता है।

इन्ट्रो

इन्ट्रो अंग्रेज़ी के 'इन्ट्रोडक्शन' (परिचय) का संक्षिप्त रूप है। आपने देखा होगा कि जो समाचार लंबे या मध्यम आकार के होते हैं, उनमें शुरू में थोड़े मोटे अक्षरों में एक पैरा दिया जाता है, जिसमें संक्षेप में पूरे समाचार की मुख्य सूचनाएँ रहती हैं। इन्ट्रो को पढ़कर पूरे समाचार की मुख्य जानकारियाँ एक बार में प्राप्त की जा सकती हैं।

ब्यौरा

इन्ट्रो के बाद समाचार थोड़े विस्तार से दिया जाता है। इसे ही समाचार या घटना का ब्यौरा कहते हैं। इसमें घटना से संबंधित सभी जानकारियाँ दी जाती हैं। घटना कब हुई, किस स्थिति में हुई क्यों हुई और उसके क्या परिणाम हो सकते हैं, उस घटना पर किसकी क्या प्रतिक्रिया हुई आदि-आदि।

समाचार-प्रस्तुति

जैसा कि जान चुके हैं, समाचारों का कार्य किसी भी घटना के बारे में लोगों को सूचना देना होता है। इस तरह से किसी भी संवाददाता को समाचार में अपने विचार व्यक्त करने की बहुत कम गुंजाइश रहती है। किंतु, कई बार देखा जाता है कि विवादास्पद समाचारों में संवाददाता अपने विचारों से मेल खाते तथ्यों अथवा अपने विचारों से मेल खाते विचारों वाले व्यक्तियों के कथनों को अधिक उजागर कर, समाचार को अपने अनुकूल बनाकर, प्रस्तुत कर देते हैं। उस समाचार के पीछे उनकी विचारधारा अथवा विचार दृष्टि छिपी रहती है। आप एक ही विषय पर छपे अलग-अलग समाचारों की तुलना करके इस बात को आसानी से समझ सकते हैं। लेकिन अख़बार को किसी का पक्षधर अथवा विरोधी न होकर तटस्थ और निष्पक्ष रहना चाहिए। अधिकांश अख़बार ऐसे ही होते हैं।

यदि आपको अख़बार पढ़ने की नियमित आदत है, तो आप समाचारों की प्रस्तुति और समाचारों के तथ्यों को पढ़कर अपनी भी राय बना सकते हैं और समाचारों पर निष्पक्ष टिप्पणी कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न-9.1

सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. अख़बारों में प्रकाशित किए जाते/की जाती हैं—

   (क) सभी घटनाएँ ☐ (ख) परिचितों के समाचार ☐

   (ग) सिर्फ़ राजनीतिक सूचनाएँ ☐ (घ) महत्त्वपूर्ण घटनाएँ ☐

टिप्पणी

2. समाचार-स्रोत के अंतर्गत निम्नलिखित में से कौन-सी बात नहीं आती?

(क) समाचार किसने प्राप्त किया ☐ (ख) कहाँ से प्राप्त किया ☐

(ग) कब प्राप्त किया ☐ (घ) क्यों प्राप्त किया ☐

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन असत्य है?

(क) समाचार तथ्यों पर आधारित होते हैं। ☐

(ख) समाचार संवाददाता के विचारों पर आधारित होते हैं। ☐

(ग) समाचार तटस्थ और निष्पक्ष होते हैं। ☐

(घ) समाचारों की भाषा अलग हो सकती है। ☐

9.2.2 संपादकीय

समाचारों पर आधारित संपादक की टिप्पणी को संपादकीय कहते हैं। संपादकीय के लिए हर अख़बार में बीच का एक पूरा पृष्ठ अलग से निर्धारित होता है। इसमें समाचारों पर संपादक की टिप्पणियाँ तो होती ही हैं, साथ ही समाचारों के विभिन्न पहलुओं पर आलोचनात्मक लेख और पाठकों की प्रतिक्रियाएँ भी प्रकाशित की जाती हैं। संपादकीय में समाचारों अथवा घटनाओं पर संपादक को अपने विचार प्रकट करने की पूरी छूट होती है। समाचारों को पढ़ने के बाद पाठक के मन में कई प्रकार की जिज्ञासाएँ उत्पन्न होती हैं और वह यह जानने के लिए उत्सुक रहता है कि संबंधित घटना उचित थी या नहीं। बहुत से समझदार पाठक समाचारों को पढ़ने के तुरंत बाद संबंधित घटना के बारे में अपनी राय बना लेते हैं और अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर देते हैं। लेकिन बहुत से पाठक ऐसे होते हैं, जो संपादकीय में प्रकाशित समाचार के विभिन्न पहलुओं को जानने के बाद अपनी राय बनाते हैं। इस तरह संपादकीय किसी भी अख़बार का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंग होता है। अतः संपादकीय टिप्पणियों और लेखों के आधार पर संपादक अथवा अख़बार की विचारधारा का आसानी से पता लगाया जा सकता है।

9.2.3 फ़ोटो

अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ोटो का महत्त्व भी समाचारों से कम नहीं होता। अख़बार में छपने वाला फ़ोटो भी अपने आपमें एक समाचार होता है। कई बार आपने देखा होगा कि अख़बार में सिर्फ़ फ़ोटो छपा होता है और उसके नीचे दो-तीन पंक्तियों की सूचना छपी होती है। इसके अलावा समाचार के साथ छपने वाले फ़ोटो के माध्यम से न सिर्फ़ उस घटनाक्रम की प्रामाणिकता का पता चलता है, बल्कि उस समाचार के बहुत सारे पहलुओं की जानकारी भी मिल जाती है। जब आप किसी स्थान पर भूकंप से हुई तबाही का समाचार पढ़ते हैं, तो आपके मन में यह जिज्ञासा अवश्य उठती है कि वहाँ का दृश्य अब कैसा है या वहाँ के लोगों के जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है। ऐसे में यदि उस समाचार के साथ चित्र देखने को मिल जाता है, तो आपकी जिज्ञासा

काफ़ी हद तक शांत हो जाती है। अक्सर ऐसा होता है कि समाचार को पढ़ने के बाद आप उतने विचलित नहीं होते, जितने उससे संबंधित चित्र को देखकर हो उठते हैं। कई बार एक फ़ोटो और उसके नीचे दी गई दो पंक्तियों की सूचना आपके मन पर समाचार से अधिक प्रभाव डाल देती है। फ़ोटो देखने के बाद उस घटना के समाचार को विस्तार से पढ़ने की भूख भी आपके अंदर पैदा हो सकती है। इस तरह फ़ोटो जहाँ अपने आप में एक समाचार होता है, वहीं वह एक महत्त्वपूर्ण समाचार का पूरक और सहायक भी होता है। फ़ोटो के नीचे दी गई सूचना को अख़बार की भाषा में **'कैप्शन'** कहते हैं।

क्रियाकलाप-9.2

(क) पिछले दो महीने में जिस समाचार ने आपको बेहद प्रभावित किया उसका वर्णन कीजिए और प्रभावित करने के कारण लिखिए:

....

....

....

....

(ख) अपने आस-पास के प्रसिद्ध स्थलों, इमारतों, लोगों के चित्र अख़बार-पत्रिकाओं से छाँटकर दिए गए बॉक्स में चिपकाइए और उनके बारे में तीन-चार वाक्य लिखिए।

(i) प्रसिद्ध स्थल

....

....

....

(ii) प्रसिद्ध इमारत

....

....

....

(iii) प्रसिद्ध व्यक्ति

....

....

....

9.2.4 फ़ीचर

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' शीर्षक पाठ आप पढ़ चुके हैं, जो फ़ीचर-शैली में लिखा गया है। आइए, यहाँ थोड़े विस्तार से फ़ीचर के बारे में जानें :

आप जानते हैं कि अख़बारों में समाचार छपते हैं। समाचारों से केवल यह जानकारी मिलती है कि क्या हुआ? उदाहरण के लिए, कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी, तो अख़बारों में यह ख़बर छपी कि एक भारतीय महिला ने अंतरिक्ष की यात्रा की। लेकिन, कल्पना कौन है? वह अंतरिक्ष में जाने का साहस कैसे जुटा पाई? उसकी इस बहादुरी ने समाज को किस प्रकार प्रभावित किया? इन बातों को सरल भाषा और मनोरंजक शैली में बताया जाए, तो वह फ़ीचर होगा। अर्थात् 'क्या हुआ?' यह बताना समाचार है। 'जो कुछ हुआ, वह क्यों और कैसे हुआ और इसका परिणाम क्या होगा'— यह बताना फ़ीचर का काम है। फ़ीचर में घटनाओं को हमारी आँखों के आगे उतार दिया जाता है, कानों में घटनाओं की आवाज़ गुँजा दी जाती है। अख़बार के तीन काम बताए जाते हैं—सूचना देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना। समाचार मात्र सूचना देते हैं। फ़ीचर हमें सूचना के आधार पर शिक्षित करते हैं और हमारा मनोरंजन करते हैं। फ़ीचर में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह रोचक भी हो। फ़ीचर कई प्रकार के होते हैं या हो सकते हैं—जनरुचि वाले, गंभीर विश्लेषणात्मक, हल्के-फुल्के और मनोरंजक तथा व्यक्तित्त्व-संबंधी। 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' व्यक्तित्व-संबंधी या 'पर्सनैलिटी फ़ीचर' है।

9.2.5 लेख

अख़बारों में प्रायः दो प्रकार के लेख प्रकाशित होते हैं — एक प्रकार के लेख वे होते हैं, जो संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होते हैं और दूसरे प्रकार के लेख वे होते हैं, जो फ़ीचर वाले पन्नों पर प्रकाशित होते हैं। संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित होने वाले लेखों की अनिवार्य शर्त होती है कि वे किसी समाचार अथवा घटनाक्रम पर आधारित हों, लेकिन फ़ीचर वाले पन्नों पर प्रकाशित होने वाले लेख किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकते हैं — राजनीति, समाज, साहित्य, खेल, फ़ैशन, फ़िल्म, व्यापार, पर्यटन आदि। इसमें यह शर्त नहीं होती कि ये किसी घटना-क्रम पर आधारित हों। इनमें सूचनाओं का होना अनिवार्य होता है। किसी समाचार अथवा घटना-क्रम को आधार बनाकर भी फ़ीचर लिखे जा सकते हैं। आजकल अख़बारों की कोशिश होती है कि ऐसे ही लेख प्रकाशित किए जाएँ, जिनमें समाचारों और सूचनाओं का अधिक-से-अधिक समावेश हो। इस तरह अब अख़बारों में प्रकाशित होने वाले फ़ीचरों में भी समाचारों और सूचनाओं को आधार बनाने की परंपरा तेजी से विकसित हुई है।

9.2.6 साक्षात्कार

साक्षात्कार यानी किसी व्यक्ति से बातचीत। इसे अंग्रेज़ी में 'इंटरव्यू' कहा जाता है। साक्षात्कार अख़बार का एक अनिवार्य अंग है। यह अपने आप में एक स्वतंत्र विधा है, किंतु इसका उपयोग अख़बार के अन्य अंगों में भी किया जाता है। इसका उपयोग समाचारों के लिए तो किया ही जाता है, साथ ही लेखों और फ़ीचर के लिए भी किया जा सकता है। साक्षात्कार से सूचनाओं की प्रामाणिकता पुष्ट होती है।